भूमिका निर्वाह प्रतिमान के द्वारा समानुभूति का विकास

अर्चना दुबे*
महेंद्र पाटीदार**

भावी शिक्षकों को अपेक्षित शिक्षण प्रक्रिया के लिए तैयार करने हेतु शिक्षण प्रतिमानों की भूमिका पर अनेक शोध किये जा चुके हैं। शिक्षण-प्रतिमानों को मुख्य रूप से सूचना प्रक्रम प्रतिमान, वैक्तिक प्रतिमान, व्यवहारिक प्रतिमान एवं सामाजिक अन्तःक्रिया प्रतिमान नामक श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। सामाजिक अन्तःक्रिया श्रेणि में समूह अन्वेषण, सामाजिक खोज, जूरिस प्रूडेंसियल एवं भूमिका निर्वाह प्रतिमान आते हैं। भूमिका निर्वाह प्रतिमान के प्रयोग द्वारा उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है और उनका उपयोग शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों व विद्यालयों में किया जा सकता है। प्रस्तुत लेख में भूमिका निर्वाह प्रतिमान व शिक्षण प्रक्रिया में उसके उपयोग पर चर्चा की गई है।

आधुनिक समय में वैज्ञानिक अविष्कार, खोजें एवं ज्ञान का उद्‌भव तेजी से हो रहा है। इस परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बदलाव की अत्यधिक आवश्यकता है। विद्यार्थी किसी विषयवस्तु को समझने के बजाय रटने पर अधिक ध्यान दे रहा है और साथ ही साथ कक्षा-कक्ष में भी परंपरागत विधियों का उपयोग शिक्षण कार्य के लिए किया जा रहा है। इस विज्ञान तथा अनुसंधान के युग में परंपरागत विधियों से भी बेहतर कई प्रकार की शिक्षण विधियाँ एवं प्रतिमान हैं, जो कि रटने की बजाय समझने पर बल देते हैं। परन्तु इस प्रकार के नवाचारों का प्रयोग अध्यापक नहीं कर पा रहे हैं।

* *विभागाध्यक्ष*, शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश
** शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश

आज शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा बालकों में रुचि, जिज्ञासा, वैज्ञानिक अभिवृत्तिलोचनात्मक चिंतन, संवेदनशीलता, मानवतावादी दृष्टिकोण, विश्लेषणात्मक योग्यता और स्व-अध्ययन के विकास करने की आवश्यकता है। विश्व में शिक्षा के स्तर में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। इसलिए हमें भी शिक्षा के परंपरागत साधनों का उपयोग कम करके नवाचार की ओर रूझान करना होगा जैसै—शिक्षण प्रतिमान, प्रमाप, स्व-अनुदेशन सामग्री और कंप्यूटर आधारित अनुदेशन आदि। इन्हीं नवाचारों में से एक है, 'शिक्षण प्रतिमान'—'शिक्षण आव्यूह' जिनका प्रमुख कार्य शैक्षिक वातावरण उत्पन्न करना है, जिससे अध्यापक विद्यार्थियों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाने में समर्थ होते हैं। इस प्रकार जब शिक्षण आव्यूह में शिक्षण प्रतिमान की सहायता से शिक्षण कार्य किया जाता है तो शिक्षण कार्य उत्तम होता है, क्योंकि यह निश्चित पदों पर आधारित होता है।

शिक्षण प्रतिमान की परिभाषा

ज्वायस एवं वेल (1985) के अनुसार—शिक्षण प्रतिमान एक योजना या पद्धति है जो पाठ्यक्रम निर्माण, अनुदेशन सामग्री निर्मित करने एवं कक्षा तथा अन्य वातावरण में अनुदेशन को निर्देशित करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है।

पासी, सिंह एवं सनसनवाल (1991) के अनुसार-शिक्षण प्रतिमान विस्तृत रूप से वर्णित एक योजना है, जिसमें सिद्धांतों पर आधारित क्रमबद्ध एवं दुहराने योग्य सोपान दिए जाते हैं जिनका प्रयोग करके शिक्षक, अधिगमकर्त्ता में कुछ निश्चित शिक्षण प्रभावों को उत्पन्न कर सकता है।

शिक्षण प्रतिमानों को विस्तृत रूप से चार श्रेणियों में बाँटा गया हैं। ये हैं—सूचना प्रक्रम प्रतिमान, वैयक्तिक प्रतिमान, व्यावहारिक प्रतिमान एवं सामाजिक अन्त:क्रिया प्रतिमान।

1. सूचना प्रक्रम प्रतिमान—व्यक्ति विभिन्न स्त्रोंतो से जानकारी प्राप्त करता है। जानकारी को मस्तिष्क में संगठित करने के लिए जो प्रक्रिया होती हैं उसे सूचना प्रक्रम कहते है। कुछ लोग सूचना को जिस प्रकार प्राप्त करते हैं उसी प्रकार अभिव्यक्त भी करते हैं परन्तु कुछ व्यक्ति उस सूचना की अभिव्यक्ति अपनी शैली में करते हैं सूचना प्रक्रम की प्रमाणिकता-अधिगम का ध्यान केंद्रण, जानकारी का क्रम एवं जानकारी को प्रस्तुत करने के माध्यम पर निर्भर करती है। इसमें संकल्पना प्राप्ति, आगमन चिंतन एवं वैज्ञानिक खोज आदि प्रतिमान आते हैं।

2. वैयक्तिक प्रतिमान—वैयक्तिक प्रतिमानों का उद्देश्य व्यक्ति को उनकी क्षमताओं के अनुसार स्वयं का विकास करने में मदद करना है। ये प्रतिमान उन प्रक्रियाओं पर बल देते हैं जिनके द्वारा व्यक्ति अपनी विशिष्ट वास्तविकताओं का निर्माण एवं संगठन करता है। इस प्रतिमान में व्यक्ति के संवेगात्मक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने वातावरण के साथ उचित संबंध स्थापित करने योग्य बनता है। इसमें चेतना प्रशिक्षण, साइनेटिक्स एवं कक्षीय गोष्ठी आदि प्रतिमान आते हैं।

3 व्यावहारिक प्रतिमान—व्यावहारिक प्रतिमान में व्यक्ति को पुनर्बलकों की सहायता से वांछित व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया जाता है जिसका उदाहरण सर्कस में पशु-पक्षियों के रूप

में देखने में आता हैं। इसका मुख्य लक्ष्य अधिगमकर्त्ता के दृश्य व्यवहारों में परिवर्तन लाना है न कि अन्तर्निहित मनोवैज्ञानिक संरचनाओं एवं व्यवहारों में। इसमें स्व-नियंत्रण, शिथिलता, दबाव न्यूनता एवं स्थापन प्रशिक्षण आदि प्रतिमान आते हैं।

4. सामाजिक अन्तःक्रिया प्रतिमान—मनुष्य एक समाज में रहता है और समाज में रहने के दौरान उसे अन्तःक्रिया करनी पड़ती है। प्रत्येक समाज के कुछ नियम, परंपराएँ, संस्कृति एवं मूल्य होते हैं। व्यक्ति को उस समाज या समुदाय में सामंजस्य स्थापित करने के योग्य बनाने के लिए उसका विकास उस समाज या समुदाय की संरचना के अनुसार किया जाना चाहिए, जिसके परिणामस्वरूप उसमें सामाजिक कौशलों का विकास हो सके। इसमें समूह अंवेषण, सामाजिक खोज, जूरिस प्रूडेंसियल खोज एवं भूमिका निर्वाह आदि प्रतिमान आते हैं।

भूमिका निर्वाह प्रतिमान शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करता है क्योंकि इसमें व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से स्वअनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता है। साथ ही ज्ञान एवं कौशलों को नजदीक से जानने व व्यावहारिक परिस्थितियों में उपयोग की योग्यता का विकास होता है।

शेफ्टल एवं शेफ्टल ने भूमिका निर्वाह प्रतिमान का विकास किया और इसे शिक्षण प्रतिमान की चार श्रेणियों में से सामाजिक अन्तःक्रिया परिवार के अंतर्गत रखा है। इस प्रतिमान में विद्यार्थी को ऐसी घटनाओं का सामना करना पड़ता है जो उसे दैनिक जीवन में आती है। भूमिका निर्वाह प्रतिमान के द्वारा निम्न शिक्षण एवं पोषक प्रभाव प्राप्त किए जा सकते हैं—

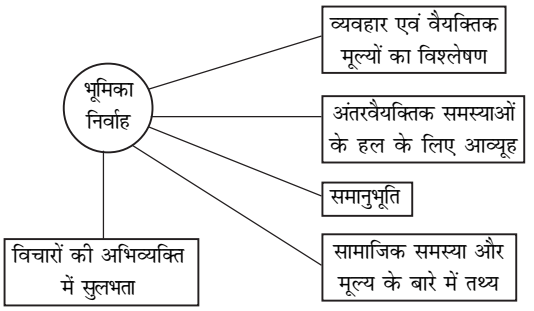

भूमिका निर्वाह प्रतिमान के शिक्षण एवं पोषक प्रभाव

समानुभूति का भूमिका निर्वाह प्रतिमान में विशेष महत्व है, क्योंकि समानुभूति में विद्यार्थी स्वयं को दूसरों की परिस्थिति में रखकर देखता है कि यदि वह घटना मेरे साथ हो तो क्या हो। हेनिज कोहुत के अनुसार समानुभूति स्वयं को दूसरे व्यक्ति के व्यक्तित्व में सोचने तथा महसूस करने की योग्यता है।

बर्गर (1987) के अनुसार समानुभूति किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के संदर्भ में उसके अनुभवों को भावनात्मक रूप से जानने की क्षमता है अर्थात यह दूसरे की भावनाओं को समझने या उसकी परिस्थिति में स्वयं को रखकर देखने की क्षमता है।

लेनपर्ट (2005) के अनुसार समानुभूति वह है जो हमें अपनों से अल्प या दीर्घ समय के लिये दूर होने पर महसूस होती है और यह दूसरों के मन में भी होती है जिनसे हम दूर रहते हैं। हम वास्तविक अवलोकन करते हैं कि यह आँखों से, भावना से व दर्द के रूप में प्रकट होती है।

क्लार्क (1984) एवं कोहन (1991) के शोधों ने कुछ अभिभावक संतान प्रक्रियाओं

एवं समानुभूति, भावनाओं, समझ एवं बच्चों में सामाजिक व्यवहार के विकास के मध्य संबंध को पहचाना है।

आइजेनबर्ग और मुसेन (1978) ने अध्ययन किया कि समानुभूति के समांतर प्रतिरूपण बच्चों की उपस्थिति में बच्चों एवं अन्यों के प्रति देखभाल व्यवहार बच्चों के पूर्व सामाजिक अभि-व्यक्ति एवं व्यवहार के विकास से संबंधित है।

भूमिका निर्वाह प्रतिमान का आधार

भूमिका निर्वाह प्रतिमान सहभागी एवं अवलोकन की वास्तविक समस्या पर आधारित है। भूमिका निर्वाह प्रतिमान की प्रक्रिया मानवीय व्यवहार का एक जीवित न्यादर्श प्रस्तुत करती है, जो कि उनकी भावनाओं को ढूँढने, उनकी अभिवृत्तियों, मूल्यों एवं प्रत्यक्षीकरण को जानने, उनके समस्या समाधान कौशल एवं अभिवृत्तियों को विकसित करने में एवं विषयवस्तु को विभिन्न दिशाओं में समझने में मदद करता है।

भूमिका निर्वाह प्रतिमान की अवधारणाएँ निम्न हैं

- यह अनुभव पर आधारित अधिगम परिस्थिति को स्पष्ट करता है इसमे वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के समान परिस्थितियाँ होती हैं अत: अभिनय सत्य, विशिष्ट संवेदनाओं और व्यवहारों को दर्शाता है। इसमें विद्यार्थी वास्तविक जीवन की समस्याओं से परिचित होता है।
- इसमें विचार एवं संवेदनाएँ सचेतन में लायी जा सकती हैं एवं समूह के द्वारा उत्पन्न की जा सकती हैं। साथ ही समूह की सामूहिक प्रतिक्रियाएँ विकास एवं परिवर्तन के लिए नये विचार एवं दिशाएँ ला सकती हैं। यह प्रतिमान अध्यापक की भूमिका को कम करता है एवं सुनने एवं अधिगम पर अधिक ध्यान देता है।
- किसी की अभिवृत्ति, मूल्यों एवं विश्वासों जैसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को अवचेतन में लाता है, अगर व्यक्ति अपनी अभिवृत्तियों एवं विश्वासों को जान लेता है तो वह उन पर नियंत्रण कर सकता है। इस तरह का विश्लेषण उन्हें उनकी अभिवृत्तियाँ, मूल्य एवं उनके विश्वासों के परिणाम को मूल्यांकित करने में मदद करता है।

भूमिका निर्वाह प्रतिमान के लक्ष्य

- भूमिका निर्वाह प्रतिमान अभिनय के द्वारा समस्याओं को ढूँढ़ता है, तथा
- समस्याओं पर अभिनय करके उन पर चर्चा करता है।

भूमिका निर्वाह प्रतिमान की पद योजना

शेफ्टल एवं शेफ्टल (1967) के अनुसार भूमिका निर्वाह प्रतिमान में नौ पद होते हैं, जो इस प्रकार है—

पद एक—तैयारी की अवस्था

इस सोपान के अंतर्गत समस्या को पहचान कर उसका स्पष्टीकरण दिया जाता है ताकि परिस्थिति व वातावरण का निर्माण हो सके। इसके साथ ही समस्याओं के मुख्य बिंदुओं को खोजा जाता है। जैसे-फर्जी मतदान की समस्या को शीर्षक के रूप में लेकर बताया जा सकता है कि फर्जी

मतदान कौन करता है? कौन करवाता है? तथा क्या हानियाँ है?

पद दो—पात्रों का चयन

इस सोपान के अंतर्गत भूमिका का विश्लेषण करके उसकी विषयवस्तु के आधार पर उपयुक्त विद्यार्थियों का पात्रों के रूप में चयन किया जाता है। जैसे—चुनाव प्रक्रिया में मुख्य चुनाव अधिकारी, सहायक चुनाव अधिकारी, तथा कुछ विद्यार्थियों को फर्जी एवं सही मतदान करने वाले व्यक्तियों के रूप में भूमिका निर्वाह के लिए चयन कर लिया जाएगा।

पद तीन—आवश्यक साज-सज्जा

इस सोपान के अंतर्गत जहाँ भूमिका की क्रिया पूर्ण हो इसके हिसाब से रूपरेखा बनानी चाहिए। जिस तरह की साज-सज्जा तथा भौतिक परिस्थितियों की नाटक को वास्तविकता के निकट लाने की आवश्यकता हो उसी तरह के प्रबंध करने की कोशिश की जानी चाहिए। जैसे—स्थान, मतपत्र, अमिट स्याही, सील, मतपत्र बाक्स, फर्नीचर, कमरे, बस, स्थान और मतदाता सूची, आदि की व्यवस्था करने का कार्य तृतीय सोपान के अंतर्गत किया जाता हैं।

पद चार—अवलोकन की तैयारी

इस सोपान के अंतर्गत भूमिका निर्वाह प्रतिमान की सफलता के लिए सम्पूर्ण कक्षा के विद्यार्थियों का सहयोग लिया जाता है, क्योंकि कुछ विद्यार्थी तो अभिनय करने के लिए पात्र के रूप में चुन लिए जाते हैं। शेष सभी विद्यार्थियों को अवलोकन का कार्य करना होता है। जैसे—यहाँ कुछ विद्यार्थियों को मतदान की प्रक्रिया को देखने के लिए कहा जाएगा तथा वे प्रारूप पर भूमिका निर्वाह करने वाले विद्यार्थियों का अवलोकन करेंगे।

पद पाँच—अभिनय करना

इस सोपान का संबंध भूमिका निर्वाह प्रतिमान की वास्तविक प्रस्तुति से है क्योंकि यहाँ सभी पात्र अपनी-अपनी भूमिका के संदर्भ में अभिनय करते हैं तथा भूमिका निर्वाह को बनाये रखते हैं एवं उसको पूर्ण करते हैं। जैसे-विद्यार्थियों की लंबी कतार लगी है जिसमें वे सही व फर्जी मतदान करने वाले व्यक्ति के रूप में एक-एक करके अपनी भूमिका निभाते हैं। फर्जी मतदान करने वाले व्यक्तियों को पीठासीन अधिकारी रोकता है तो फर्जी मतदान करने वाले व्यक्ति अधिकारी से बहस करने लगते हैं तथा अपने को सही साबित करने की कोशिश करते हैं। वे अन्य असामाजिक तत्वों की सहायता से फिर भी फर्जी मतदान करने में कामयाब हो जाते हैं। इस प्रकार वे अपराधी प्रवृत्ति के उम्मीदवार को विजेता बनाने का प्रयास करते हैं। कुछ दिनों बाद परिणाम घोषित होता है तथा जिस प्रत्याशी के लिए फर्जी मतदान किया गया था, वह जीत जाता है। जो प्रत्याशी ईमानदार व बेदाग छवि का होता है, वह हार जाता है। आम जनता को ईमानदार व्यक्ति के प्रति सहानुभूति व समानुभूति होती है।

पद छः—चर्चा और मूल्याँकन

इस सोपान के अंतर्गत शिक्षक तथा सभी विद्यार्थी मिलकर किए गए प्रस्तुतीकरण पर चर्चा करते हैं। साथ ही यह भी देखते है कि किस विद्यार्थी ने किस प्रकार की भूमिका निभाई है। इस प्रकार मुख्य बिंदुओं पर चर्चा करके अगला अभिनय

विकसित किया जाता है। जैसे-पीठासीन अधिकारी की भूमिका निभाने वाले विद्यार्थी को कहा जाएगा कि आपके अभिनय में कुछ कमियाँ है, उदाहरण के लिए आपको फर्जी मतदाताओं को मतदान करने से रोकना था, पुलिस को बुलाना था, आदि।

पद सात—पुनः अभिनय करना

इस सोपान के अंतर्गत संशोधित भूमिका का पुनः अभिनय किया जाता है क्योंकि पिछले सोपान में चर्चा और मूल्याँकन द्वारा जो-जो बिंदु उभर कर सामने आए उनको विशेषकर सामने रखा जाता है तथा पुनः उन्हीं विद्यार्थियों को अभिनय का अवसर दिया जाता है। जैसे—पीठासीन अधिकारी तथा सभी अन्य भूमिका निभाने वाले पुनः अभिनय करेंगे तथा पीठासीन अधिकारी की भूमिका निभाने वाले को विशेष रूप से सुधार के साथ अपना अभिनय करना है।

पद आठ—पुनः चर्चा और मूल्याँकन

इस सोपान के अंतर्गत पुनः अभिनय के संदर्भ में चर्चा करते हैं तथा यह देखते हैं कि जिस उद्देश्य के लिए भूमिका निर्वाह की गयी थी उसमें सहभागी सफल हुए या नहीं तथा पुनः जब विद्यार्थियों ने भूमिका निभायी तो वह पहले की तुलना में कितनी प्रभावी थी इस तथ्य का भी मूल्याँकन किया जाता है। जैसे—अब यहाँ इस बात पर बल दिया जाएगा कि विद्यार्थियों ने इस चुनाव प्रक्रिया में किस प्रकार का अनुभव प्राप्त किया। समानुभूति के परिप्रेक्ष्य में सभी विद्यार्थियों से यह पूछा जाएगा कि आप यदि उस हारने वाले उम्मीदवार की जगह होते तो आप किस प्रकार का अनुभव करते। इसके पश्चात सभी विद्यार्थी इस भूमिका पर प्रतिवेदन लिखेगें।

पद नौ—अनुभव बाँटना एवं सामान्यीकरण

इस सोपान के अंतर्गत समस्यात्मक परिस्थिति को वास्तविक अनुभवों एवं वर्तमान समस्याओं से जोड़ा जाता है तथा व्यवहार के सामान्य सिद्धांतों को खोजा जाता है। सामान्यीकरण के पश्चात उनका भविष्य में उपयोग करने की सलाह दी जाती है। जैसे—आज की वर्तमान परिस्थिति में इस विषय को रखा जाएगा तथा विद्यार्थियों को समझने का मौका मिलेगा कि फर्जी मतदान जैसी प्रक्रिया को इस लोकतात्रिंक देश से कैसे हटाया जा सकता है। वे आपस में चर्चा करेंगे कि इसके क्या दुःष्परिणाम होते हैं तथा कैसे बेईमान व भ्रष्ट व्यक्ति राजनीति में आ जाते हैं तथा ऐसे भ्रष्ट लोगों को राजनीति में आने से कैसे रोका जाए।

उपर्युक्त उदाहरण की सहायता से यह अनुभव किया जा सकता है कि इस प्रकार के समस्याजनक दृष्टांत हमारे जीवन में भी आ सकते हैं तथा उस परिस्थिति में हम किस प्रकार का अनुभव करेंगे तथा समस्या का समाधान किस प्रकार करेंगे।

शिक्षण प्रक्रिया में भूमिका निर्वाह प्रतिमान के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष परिणाम

(क) विद्यार्थियों को परिस्थिति को निकट से जानने का मौका मिलता है।

(ख) विद्यार्थी व्यक्तिगत अनुभव द्वारा घटना की गहनता को समझ सकते हैं।

(ग) विद्यार्थियों में रुचि व उत्साह का विकास किया जा सकता है।

(घ) विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन के यथार्थ का अनुभव होता है।

(ङ) विद्यार्थियों में संचार कौशल व अभिव्यक्ति की कला का विकास होता है।

(च) विद्यार्थियों में समूह में कार्य करने की भावना का विकास होता है।

(छ) विद्यार्थियों में समस्या समाधान की योग्यता का विकास होता है।

लेकिन इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण अनुदेशनात्मक प्रभाव है भूमिका निर्वाह प्रतिमान द्वारा विद्यार्थियों में समानुभूति का विकास होना। जब कोई विद्यार्थी दूसरे की समस्याओं का अवलोकन करते हैं या देखते हैं और उन समस्याओं पर भूमिका निर्वाह प्रतिमान की सहायता से किसी प्रकरण पर अभिनय करते हैं तब उनमें दूसरे की समस्याओं को समझने की सजगता व क्षमताओं का विकास होता है। इस के साथ ही विद्यार्थियों की उपलब्धि भी बढ़ती है, जिससे उनकी चिंता व तनाव भी कम होता है। इस प्रतिमान का कक्षा-कक्ष में उपयोग किया जा सकता है। ऐसे व्यक्ति जिनमें दूसरों के दु:खों व समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता हो, जो दूसरों की समस्याओं को स्वयं अनुभव करें वे उसका समाधान भूमिका निर्वाह द्वारा कर सकते हैं।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि भूमिका निर्वाह प्रतिमान का प्रयोग शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों व अन्य विद्यालयों व महाविद्यालयों में भी किया जा सकता है। इसमें विद्यार्थियों को समस्या के अनुसार अध्यापक, विद्यार्थी, अवलोकनकर्त्ता, प्राचार्य एवं समीक्षक इत्यादि की भूमिकाएँ निभाने के लिए कहा जा सकता है। इस प्रकार के अनुभवों द्वारा उनमें आवश्यक कौशल तथा व्यवहार का विकास समुचित ढंग से किया जा सकता है। उचित विषयवस्तु का चुनाव कर, यदि उस पर विद्यार्थियों द्वारा बार-बार भूमिका निर्वाह करवाया जाए, तब उनमें समानुभूति का विकास होने की संभावना अधिक होती है।

संदर्भ

अग्रवाल, जे. सी. 2007. *शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

चौहान, एस. एस. 1979. *इनोवेशन इन टीचिंग लर्निंग प्रोसेस*, विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली

जोएस. बी, और एम. वेल. 1985, *मॉडल ऑफ टीचिंग,* सैकेंड एडिशन, प्रिंटस हॉल, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

पाण्डेय, के. एवं एस. श्रीवास्तव. 2007. *शिक्षा मनोविज्ञान*, टाटा मेग्राहिल पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली

बर्जर, डी. एम. 1987. *क्लिनिकल एम्पैथी,* जेनसन, एरोसन, इंक, नार्थ वाले